प्रार्थना एवं पुस्तक-परिचय



संकीर्तन भवन, झूसी (प्रयाग)

प्रा

कृतक

श्रीहरिः

झूसी संकीर्तन भवन, प्रति... (प्रयाग)

की

नित्य प्रा...

और

पुस्तकों का सूची... (पुस्तक परिचय)

...म्ह

तुम्हें ...य

लिखू भागवत ...ाऊँ समय बीतै चिन्तन में।
छपवाई तुम भक्त पढ़ैं सुख पावैं मन में॥
लिखवाओ तुम नाथ! तुमहिँ धन दै छपवाओ।
तुमहिँ प्रचारक बनो, स्वयं परचार कराओ॥
सब कछु तुम ही करत प्रभु, मोइ निमित्त बनाइकें।
मेरी ममता मेंटि दें, मनमोहन मुसुकाइ कें॥

प्रभुदत्त

अकृत्वा परसंतापमगत्वा खलमन्दिरम्।
अक्लेशयित्वा चात्मानं यदल्पमपि तद् बहु॥

प्रकाशक

सङ्कीर्तन भवन, प्रतिष्ठानपुर (झूसी) प्रयाग

पञ्चम बार
४००० } सम्वत् २०१५ विक्रमी

मुद्रक—भागवत प्रेस, झूसी (प्रयाग)

झूसी सङ्कीर्तन भवन, प्रतिष्ठानपुर प्रार्थना और पुस्तक–सूची (पुस्तक परिचय)

की

विषय-सूची

प्रार्थना

(१)

जीवन सेवा हेतु तुम्हारी होवै स्वामी।
कबहुँ करूँ न कुकर्म तुम्हें लखि अन्तरयामी॥
करिकें कीर्तन कथा तुम्हें ही नाथ रिझाऊँ।
लेखन कीर्तन गान नहीं व्योपार बनाऊँ॥
स्वाँस स्वाँस पै नाम प्रभु, रटूँ जपूँ सुमिरन करूँ।
माधव मनहर मूर्ति तव, भक्ति सहित हियमहँ धरूँ॥

(२)

धन ही सरवसु समुझि धनिनिढिँग नहीं रिरयाऊँ।
पैसा हित लिखि ग्रन्थ नहीं व्योपार बढ़ाऊँ॥
जीऊँ तुमरे हेतु मरूँ तब नामनि गावत।
करत प्रतीच्छा रहूँ नन्दनन्दन कब आवत॥
गङ्गा जमुना के निकट, पुन्य भूमि में हीं मरूँ।
तव प्रसाद प्रभु पाइ फल, गो विप्रनि सेवा करूँ॥

(३)

सरबसु सेवा समुझि सतत सेवा व्रतधारी।
ब्रह्मचर्यव्रत धारि, बनूँ विधिवत ब्रमचारी॥
जीवन जिह है छनिक सलिल बुदबुद वत मानूँ।
काम क्रोध मद लोभ तजूँ हरिमय जग जानूँ॥
प्रभु प्रसन्न ह्वै जायँ यदि, तो सब सार्थक काम हैं।
पैसा जीवन लक्ष्य यदि, तो निष्फल सब काम हैं॥

संकीर्तन भवन झूसी (प्रयाग) { प्रभुदत्त

दैनिक स्तुति विनय

(श्री ब्रह्मचारीजी जो दोनों समय प्रार्थना करते हैं)

वंशी विभूषित करान्नवनीरदाभात् ।
पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात् ॥
पूर्णेन्दुसुन्दर मुखादरविन्दनेत्रात् ।
कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥ १ ॥

गोधूलि धूसरित कोमल गोपवेशम् ।
गोपालबालक शतैरनुगम्यमानम् ॥
सायंतने निजगृहे पशुबन्धनार्थम् ।
गच्छन्तमच्युतशिशुं प्रणतोऽस्मि नित्यम् ॥२॥

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोःकर्णिकारम् ।
बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम् ॥
रन्ध्रान्वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपबृन्दैः ।
बृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशत् गीतकीर्तिः ॥३॥

अहो बकीयं स्तनकालकूटं
जिघांसयापाययदप्यसाध्वी ।
लेभे गतिं ध्यात्र्युचितां ततोऽन्यम् ,
कं वा दयालुं शरणं व्रजेम ॥४॥

त्वमेवमाता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखात्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं ममदेवदेव ॥५॥

श्रीमद्भागवतं पुराणतिलकं यद् वैष्णवानां धनम्
यस्मिन् पारमहंस्यमेकममलं ज्ञानंपरं गीयते ।
यत्र ज्ञान- विराग-भक्तिसहितं नैष्कर्म्यमाविष्कृतम्
तच्छृण्वन् प्रपठन् विचारणपरो भक्त्याविमुच्येन्नरः ॥६

एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतम्,
एकोदेवो देवकीपुत्र एव ।
एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि
कर्माप्येकं तस्य देवस्यसेवा ॥७

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमोनमः ॥८
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत् पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥९॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥१०
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥११
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात् ।
करोमि यत्तत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥१२
अगाध सहस्र भाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु ॥१३
यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनंसम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम् ॥१४
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च ।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥१५

श्रीहरिशरणाष्टकम्

ध्येयं वदन्ति शिवमेव हि केचिदन्ये
शक्तिं गणेशमपरे तु दिवाकरं वै ।
रूपैस्तु तैरपि विभासि यतस्त्वमेव
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥१॥

कोई शिव को ही ध्येय बताते हैं तथा कोई शक्ति को, कोई गणेश को, कोई भगवान् भास्कर को ही ध्येय कहते हैं; उन सब रूपों में आप ही भास रहे हैं, इसलिये हे दीनबन्धो ! मेरी शरण तो एकमात्र आप ही हैं ॥१॥

नो सोदरो न जनको जननी न जाया
नैवात्मजो न च कुलं विपुलं बलं वा ।
संदृश्यते न किल कोऽपि सहायको मे
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥२॥

भ्राता, पिता, माता, स्त्री, पुत्र, कुल एवं प्रचुर बल—इनमें से कोई भी मुझे अपना सहायक नहीं दीखता; अतः हे दीनबन्धो ! आप ही मेरी एकमात्र शरण हैं ॥२॥

नोपासिता मदमपास्य मया महान्त-
स्तीर्थानि चास्तिकधिया न हि सेवितानि ।
देवार्चनं च विधिवन्न कृतं कदापि ।
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥३॥

मैंने न तो अभिमान को छोड़कर महात्माओं की आराधना

ही की है न आस्तिकबुद्धि से तीर्थों का सेवन किया है और न कभी विधिपूर्वक देवताओं का पूजन ही किया है; अतः हे दीनबन्धो ! अब आप ही मेरी एकमात्र शरण हैं ॥३॥

दुर्वासना मम सदा परिकर्षयन्ति
चित्तं शरीरमपि रोगगणा दहन्ति ।
संजीवनं च परहस्तगतं सदैव ।
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥४॥

दुर्वासनाएँ मेरे चित्त को सदा खींचती रहती हैं, रोगसमूह सर्वदा शरीर को तपाते रहते हैं और जीवन तो सदैव परवश ही है; अतः हे दीनबन्धो ! आप ही मेरी एकमात्र शरण हैं ॥४॥

पूर्वं कृतानि दुरितानि मया तु यानि
स्मृत्वाखिलानि हृदयं परिकम्पते मे ।
ख्याता च ते पतितपावनता तु यस्मात् ।
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥५॥

पहले मुझसे जो-जो पाप बने हैं, उन सबको याद कर करके मेरा हृदय काँपता है; किन्तु तुम्हारी पतितपावनता तो प्रसिद्ध ही है, अतः हे दीनबन्धो ! अब आप ही मेरी एकमात्र शरण हैं ॥५॥

दुःखं जराजननजं विविधाश्च रोगाः
काकश्वसूकरजनिर्निरये च पातः ।
ते विस्मृतेः फलमिदं विततं हि लोके ।
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥६॥

प्रभो ! आपको भूलने से जरा-जन्मादिसम्भूत दुःख, नाना व्याधियाँ, काक, कुत्ता, शूकरादि योनियाँ तथा नरकादि में पतन

ये ही फल संसार में विस्तृत हैं, अतः हे दीनबन्धो ! अब आप ही मेरी एकमात्र गति हैं ॥६॥

नीचोऽपि पापवलितोऽपि विनिन्दितोऽपि
ब्रूयात्तवाहमिति यस्तु किलैकवारम् ।
तं यच्छसीश निजलोकमिति व्रतं ते ।
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥७॥

नीच, महापापी अथवा निन्दित ही क्यों न हो, किन्तु जो एक बार भी यह कह देता है कि "मैं आपका हूँ" उसी को आप अपना धाम दे देते हैं, हे नाथ ! आपका यही व्रत है' अतः हे दीनबन्धो ! अब आप ही मेरी एकमात्र गति हैं ॥७॥

वेदेषु धर्मवचनेषु तथागमेषु
रामायणेऽपि च पुराणकदम्बके वा ।
सर्वत्र सर्वविधिना गदितस्त्वमेव ।
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥८॥

वेद, धर्मशास्त्र, आगम, रामायण तथा पुराणसमूह में भी सर्वत्र सब प्रकार आप ही का कीर्तन है; अतः हे दीनबन्धो अब आप ही मेरी एकमात्र गति हैं ॥ ८ ॥

इति श्रीमत्परमहंसस्वामिब्रह्मानन्दविरचितं श्रीहरिशरणाष्टकं सम्पूर्णम् ।

हिन्दू धर्म और हिन्दी-साहित्य में युगान्तकारी
धार्मिक प्रकाशन

"भागवती कथा"

देशके विभिन्न विद्वानों नेताओं और पत्रकारों द्वारा,
भूरि-भूरि प्रशंसित। इसके लेखक हैं

श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

इसे पढ़कर आप

१—श्रीमद्भागवत तथा अन्यान्य पुराणों की कथाओं का रहस्य सरलता सरसता और घरेलू ढंग से समझेंगे।

२—दैनिक जीवन को सात्विक, धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन की सार्थकता में परिणत करेंगे।

३—व्यावहारिक या गार्हस्थ्य जीवन को जीने के लिये नहीं, जीवन के लिये इसके पठन से उसे उच्च और धार्मिक बनायेंगे।

४—श्रेय और प्रेय, योग और भोग एक साथ सम्पादन करने—प्राप्त करने—की शिक्षा घर बैठे प्राप्त करेंगे।

५—जननी जन्मभूमि की महत्ता को समझकर स्वधर्म स्ववर्ण, स्ववेश, तथा स्वदेश के प्रति निष्ठावान बनेंगे।

इस अभूत-पूर्व ग्रन्थ में १०८ भाग होंगे।

प्रति मास एक भाग प्रकाशित करने की योजना चल रही है। अब तक ६६ भाग छप चुके हैं। प्रायः २५० पृष्ठों के प्रत्येक सचित्र भाग की दक्षिणा केवल १।) है।

१५।॥≡) अग्रिम वार्षिक प्रदान करने पर १२ भाग बिना डाकव्यय के आप के घर रजिष्ट्री से पहुँच जायँगे।

प्राप्तिस्थान

संकीर्तन भवन, झूसी (प्रयाग)

"कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्"

संकीर्तन-भवन, प्रतिष्ठानपुर (झूसी) प्रयाग
से प्रकाशित होने वाली'

"भागवती कथा"

को

अवश्य पढ़ें ।

प्रश्न—'भागवती कथा' के लेखक कौन हैं ?

उत्तर—इसके लेखक हैं, श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी ।

प्रश्न—इनका कुछ परिचय ?

उत्तर—ये जटा जूटधारी हैं, मौनी फलाहारी हैं, बड़े हँसमुख हैं; खिल-खिलाकर हँसते हैं, सबको हँसाते हैं । ये कोई बहुत बड़े महापुरुष नहीं । साधारण आदमी हैं, किन्तु हैं बड़े चंचल । आप "भागवती कथा" पढ़ते हुए ऐसा अनुभव करेंगे हम मानो उनसे बातें ही कर रहे हैं- । ऐसी चुभती हुई बातें लिखते हैं, कि स्थान-स्थानपर हँसते-हँसते लोट पोट हो जाते हैं, यह बात नहीं कि ये कोई बहुत गंभीर दार्शनिक भावों को ही समझाते हैं । व्यवहारकी बातोंका आप इनकी कृतिमें दर्शन करेंगे । 'भागवती कथा, इनके स्वभावका प्रतिबिम्ब है, ब्रह्मचारीजीने अपना स्वभाव इसमें भर दिया है ।

प्रश्न—"भागवती कथा" क्या किसी ग्रन्थका अनुवाद है ?

उत्तर—जी नहीं, यह श्रीमद्भागवतके आधारपर लिखा स्वतन्त्र ग्रन्थ है । यद्यपि इसमें भागवतके सभी श्लोकोंका भाव आ गया है, अपने ढंगका यह स्वतन्त्र ग्रन्थ है । जैसे भागवत में करन्धम खननेत्र इन राजाओंके केवल नाम आये हैं, तो इनकी कथाएँ जिन पुराणोंमें मिली हैं, उनसे लेकर अपनी भाषामें बड़े ढंगसे लिखी गयी हैं ।,

प्रश्न—"भागवती कथा" कहाँसे निकलती है ?

उत्तर—प्रयागके उस पार त्रिवेणीजीके सम्मुख गंगातटपर प्रतिष्ठानपुर (झूसी) नामक एक परम प्राचीन नगर है जहाँ चन्द्रमाके पुत्र बुधके तनय इलाके गर्भसे उत्पन्न महाराज पुरूरवाकी राजधानी थी। वहीं एक संकीर्तन–भवन है। भागवत-प्रेस है। वहींसे "भागवती कथा" निकलती है।

प्रश्न—"भागवती कथा" एक ही पुस्तक है या कई खण्डोंमें है ?

उत्तर—'भागवती कथा' सुनते हैं १०८ खण्डों में निकलेगी। अब तक इसके छियासठ खण्ड छप चुके हैं। आगेके लिखे जा रहे हैं

प्रश्न—"भागवती कथा" का मूल्य क्या है ?

उत्तर-'भागवती कथा, का मूल्य क्याजी ! 'भागवती कथा' अमूल्य ग्रन्थ है। उसका मूल्य कोई दे ही क्या सकता है, दक्षिणा कहो।

प्रश्न—":अच्छा भाई दक्षिणा ही बताओ।"

उत्तर—अच्छा दक्षिणा तो सवा रुपया प्रसिद्ध ही है। प्रत्येक खण्ड ले लो सवा रुपया दक्षिणा दे दो। कथा सुनलो, पढ़लो पढ़ालो।"

प्रश्न—दक्षिणा तो बहुत है जी ! साधारण श्रेणीके लोग कैसे ले सकते हैं ? १०८ खण्डोंके १३५) हुए और फिर डाक-व्यय पृथक् एक साथ लगभग डेढ़ सौ रुपये साधारण लोग कैसे दे सकते हैं ?

उत्तर—अजी,एक साथ कौन माँगता है। आप १५।।।=) एक साथ भेजदें। एक वर्षतक दो दो खण्ड रजिष्ट्री से आपको घर बैठे मिल जायँगे। न डाकव्यय न रजिष्ट्रीका व्यय। आप सोचें ढाई सौ पृष्ठकी पुस्तक। सुन्दर कागदपर छपी हुई पुस्तक। जिसमें एक सुंदर तिरंगा चित्र ७-८ सादे चित्र हों, डाकव्यय सहित बाजारमें कहीं १।) में मिल सकती है ?"

प्रश्न—अजी न मिले स्वल्प मूल्य ही सही। फिर भी १५।।।=)एक वर्षमें देने कठिन हैं ?

उत्तर—क्या कठिन हैं जी ? घर गृहस्थी के कितने काम होते हैं। लगभग ढाई पैसे नित्य पड़े। इससे लाभ कितना होगा।"

प्रश्न—हाँ 'भागवती कथा, पढ़नेसे लाभ क्या होगा ?"

उत्तर—'भागवती कथा, पढ़नेसे आपके घरका वातावरण धार्मिक होगा।' "भागवती कथा,में बड़ी रोचक कहानियाँ हैं, उन्हें बालक बालिकायें उपन्यासों की भाँति अत्यंत चाव से पढ़ते हैं। उपन्यास और सिनेमा तो पढ़ने देखनेके अनन्तर अपना विषैला प्रभाव छोड़ जाते हैं किन्तु "भागवती कथा" सबके हृदयपर धार्मिक छाप लगा देती है।"

साधारण पढ़ी लिखी मातायें भी 'भागवती कथा' को बड़े चावसे पढ़ती हैं। बड़े बड़े घरकी मातायें इन कथाओं को स्वयं पढ़ती हैं, पढ़कर सुनाती हैं। बच्चोंका मनोरंजन करती हैं।

बालकपनमें बच्चोंके मनपर जैसा प्रभाव पड़ जाता है, वह सदाके लिये अमिट हो जाता है। 'भागवती कथा' में धार्मिक शिक्षा भी है मनोरंजन भी है। सभी श्रेणीके लोगोंने इन कथाओंकी भूरि भूरि प्रशंसाकी है। सैकड़ों स्थानोंमें इनकी नियमित कथाएँ होती हैं परिवारमें एक विशुद्ध वातावरण छा जाता है। साहित्य की दृष्टिसे देखो, इसमें व्रजभाषाकी सुन्दर सुन्दर छप्पयें हैं। भावमयी कहानियाँ हैं ऊँचे दर्शनिक विचार सरल भाषामें व्यक्त किये गये हैं। सारांश जानने योग्य सभी बातें इनमें हैं।

प्रश्न—"भागवती कथा" की आप इतनी विशेषताएँ बताते हैं ये सब उसमें होंगी, किन्तु १०८ खण्ड बहुत होते हैं। कहाँ लादे फिरेंगे, एक भी न लिया तो ग्रन्थ अधूरा रह जायगा।"

उत्तर—अजी, यह तो आपका भ्रम है। उसका प्रत्येक खण्ड ही नहीं प्रत्येक अध्याय भी स्वतंत्र है। आप जितना ही पढ़ें उतना ही हितकर है। कोई भी एक खण्ड मँगाकर आप पढ़ें तो सही,सब

बातें आपको विदित हो जायँगी। आप चाहे जिस श्रेणी के पुरुष क्यों न हों इतना ही है, कि ईश्वर और धर्मको ढोंग न समझते हों, हम प्रतिज्ञा-पूर्वक दृढ़ताके साथ कहते हैं। आप "भागवती कथा" को अवश्य ही पसन्द करेंगे। आप १।) भेजकर प्रथम खण्ड मँगालें। सवा रुपये भी भारी लगते हों तो चार आने की टिकट भेजकर 'भागवती कथा की बानगी" मँगालें। जैसे तनिक-सी मिठाई की बानगी चाखकर सब मिठाईका पता चल जाता है वैसे ही "भागवती कथा की बानगी"पढ़कर आप सब जान जायँगे। आप हमारे कहने से 'भागवती कथा के, एक खण्ड को पढ़ें। अवश्य पढ़ें।

प्रश्न—तो आपकी सम्मति है, कि हम 'भागवती कथा, मँगायें ?

उत्तर—अवश्य मँगाइये ! अवश्य मँगाइये, बिना हिच-किचाहटके मँगाइये ?

प्रश्न—अच्छा तो पता बताइये ?

उत्तर—पता बहुत छोटा है, "व्यवस्थापक" सङ्कीर्तन-भवन, झूसी प्रयाग" इसी पतेपर आज एक पाँच नये पैसे का कार्ड लिख दो, सात दिन के बाद प्रथम खण्ड आजायेगा। १५॥।≡) भेजो तो १२ खण्ड घर बैठे मिल जायँगे ८२॥) भेजो तो ६६ खण्ड मिल जायँगे आगे के खण्ड छपने पर फिर मिल जायँगे। रुपया न भेजो तो उतने रुपये का वी० पी० आ जायगा। हमने आपको सच्ची बात बता दी, अब मँगाना न मँगाना आपके अधीन है।

ब्रह्मचारीजी की लिखी और भी बहुत सी पुस्तकें हैं, वे यही तो काम करते रहते हैं, सफेद कागजों को काले करते रहते हैं। अब मुझे समय नहीं, साहब ! और पुस्तकों का विज्ञापन आगे पढ़े।

ब्रह्मचारीजीकी सब पुस्तकें मिलनेका पता—

व्यवस्थापक—संकीर्तन-भवन,

प्रतिष्ठानपुर-झूसी, (प्रयाग)

'भागवती कथा'

पर

सुप्रसिद्ध पुरुषों की सम्मतियाँ

हमारे पास 'श्रीभागवती कथा' के सम्बन्ध में बहुत से ग्राहक अनुग्राहक, कृपालु साहित्य सेवी विद्वानों की सम्मतियाँ आयी हैं। वे सब स्थानाभाव के कारण दी भी नहीं जा सकतीं और वांछनीय भी नहीं। उनमें से हम कुछ सुप्रसिद्ध संत, महात्मा तथा विद्वानों की सम्मतियाँ देते हैं।

श्री श्रीजगद्गुरु शंकराचार्य श्रीद्वारिका शारदापीठाधीश्वर श्री ११०८ श्री स्वामी श्री अभिनवसच्चिदानन्द तीर्थ जी महाराज—

"व्यवस्थापक श्री संकीर्तन भवन झूसी को आदरपूर्वक यह आवेदित किया जाता है कि श्रीमान् ने जो श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारी द्वारा विरचित श्रीभागवती कथा नामक पुस्तक भेजीउसे देखकर श्रीजगद्गुरुचरण अत्यन्त प्रसन्न हुए। श्रीमद्भागवत के सारभूत अंश को नवीन एवं सरलरीति से जनता के सामने रखने का जो यह—श्री प्रभुदत्तीय-प्रयत्न है उसका अतिशय प्रमोदपूर्ण हृदय से अत्यन्त अभिनन्दन किया जाता है।

श्रीजगद्गुरुचरण का शुभ आशीर्वाद है कि इन श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारी का प्रयत्न समुन्नत हो और वे इस ग्रन्थ के अग्रिम भागों का इसी प्रकार सुन्दर समाकलन करें।

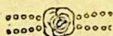
पता—संकीर्तन भवन, झूसी (प्रयाग)

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य ब्रह्मनिष्ठ लोकसंग्रही परलोकवासी गीता व्यास श्री ११०८ जगद्गुरु महामण्डलेश्वर स्वामी श्री विद्यानन्दजी महाराज—

इस काल में कलिदोषों के निवारणार्थ और विश्वजनकल्याणार्थ आज के ऋषिकल्प मनीषी जो सत्प्रयत्न कर रहे हैं, उनमें अन्यतम श्रीप्रभुदत्तब्रह्मचारीजी हैं। आपके जप, स्वाध्याय, पारायणों जैसे सुप्रसिद्ध अनुष्ठानों के समान ही अनूठी कृति यह 'भागवती कथा' अवतरित होने आई है।

हमें तो ब्रह्मचारीजी के हृदय में से देवर्षि नारद की वाणी प्रकट होती दीख रही है, जो ऐसे कृत्यों में व्यास, वाल्मीकि के भी गुरु और सर्वश्रेष्ठ भगवत् परायणो हुए और स्यात् ब्रह्मचारी जी जैसों के रूप में अब भी हो रहे हैं।

हमारी कामना है कि 'इलाहाबाद' के हमलों से ब्रह्मचारीजी, 'प्रयाग' और 'प्रतिष्ठानपुर' की प्रतिष्ठा को ऐसे प्रयत्नों से अक्षुण्ण रखने में समर्थ होंगे।



श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमान् ११०८ श्री स्वामी भागवतानन्दजी महाराज महामण्लेश्वर, काव्य, योग, न्याय, वेद तथा वेदान्तादि तीर्थ, वेदान्त वागीश, मीमांसाभूषण' वेदरत्न, दर्शनाचार्य जी :—

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी की लिखित "भागवती कथा" का मैंने मनोयोगपूर्वक निरीक्षण किया। यह भागवत की अत्युत्तम प्राञ्जल व्याख्या भूरि भूरि प्रशंसनीय है। प्रत्येक धर्म प्रेमी को इसका संग्रह करना चाहिये। आकार प्रकार भी सुन्दर है। अन्त में प्रभु से यही प्रार्थना है।

पता—संकीर्तन भवन, झूसी (प्रयाग)

प्रभुप्रभूतभक्तेन प्रभुदत्तेन वर्णिना ।
कृता "भागवती व्याख्या" लोके प्राञ्चतुसर्वतः ॥

—:०:—

उत्तर भारत के सुप्रसिद्ध सन्त ब्राह्मीभूत पूज्यपाद श्री श्री १०८ श्री उड़िया बाबाजी महाराज (श्री स्वामी पूर्णानन्दजी महाराज) का आशीर्वादात्मक सन्देश—

ब्रह्मचारीजी की 'भागवती कथा' नामक पुस्तक बड़ी ही अच्छी लिखी गई है। अत्यन्त रोचक है।

———

उत्तर भारत के सुप्रसिद्ध सन्त पूज्यपाद श्री श्री १०८ श्रीहरिबाबा जी महाराज (श्री स्वामी स्वतः प्रकाशजी) का शुभ सन्देश—

यह 'भागवती कथा' की पुस्तक सर्व साधारण के अत्यन्त ही उपयोगीहै। सबके लिये लाभदायक है और बहुत ही रोचक है।

———

कलियुग जनपावनावतार भक्तजीवजीवातु परम पुमर्थ प्रेम वितरण परायण भगवत् श्री श्रीकृष्ण चैतन्य चरणोपदिष्टैकवीथी पथिक श्रीमन्माध्व-सम्प्रदायाचार्य दार्शनिक सार्वभौम साहित्य दर्शनाद्याचार्य्य तर्करत्नन्यायरत्न परलोकवासी गोस्वामि श्री दामोदर शास्त्री जी—

तीर्थराज प्रयाग के समीप झूसी ग्राम में निवास करनेवाले श्रीभगवद्भक्तिनिष्ठ तपस्वी लोकोपकार का दृढ़व्रत लेनेवाले पंडित श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारी महोदय के द्वारा देशभाषा में लिखी गई 'भागवती कथा' नामक पुस्तक का द्वितीय खण्ड सम्मति के लिये मेरे पास भेजा और उसे देखा।

संस्कृत भाषा न जाननेवालोंकी' श्री भगवान् और उनके भक्तोंके चरित्रोंको जाननेकी इच्छावालों की तथा बिस्तारपूर्वक इतिहासमें प्रबल रुचि रखनेलालों की अभिलाषाको पूर्ण करती, हुई सर्वतोभावेन उपकार करती हुई यह पुस्तक आजकल प्रचलित अन्य पुस्तकोंके समूहोंमें सब तरह सर्वश्रेष्ठ है। इसमें अणुमात्र भी सन्देहावसर नहीं है, यह हमारा दृढ़ सम्मत है।

श्री सम्प्रदायाचार्य्य वैकुण्ठवासी पूज्यपाद श्री १०८ श्री स्वामी रामानुजाचार्य्य जी महाराज वेदान्तशिरोमणि—

आपकी लेखनीसे प्रकट 'भागवती कथा'
"यमगण मुंहमसि जग जमुना सी।
जीवन-मुक्ति हेतु जनुकाशी॥"

निस्सन्देह है। यह पीयूषधारा संसाराग्नि विदीपन व्यपगत प्राणात्मसंजीवनी है। इसकी जितनी प्रशंसाकी जाय थोरी है—परमहंससंहिताऽपरपर्याय श्रीमद्भागवतागमके तलस्पर्शी भाव-प्रदर्शिनी आपकी लेख शैली देखकर फूले अंग नहीं समाता हुआ आपकी सेवामें मंगलाशासन निवेदन करता हूँ।

भगवद्दत्तज्ञानाय ब्रह्मचर्य स्वरूपिणे॥
प्रेमामृतप्रदेतस्मै प्रभुदत्ताय मंगलम्॥१॥

श्रीरामानुजीय श्रीसम्पदायाचार्य्य श्रीवृन्दावन निवासी पूज्यपाद श्री १०८ श्री स्वामी चक्रपाणि जी महाराज वेदान्ताचार्य्य—

इस ग्रन्थ को आरंभ किया, जहाँ अध्याय समाप्त हुआ, कि दूसरा अध्याय स्वतः ही आरम्भ कर देते हैं। चित्त पुस्तक छोड़ने को चाहता ही नहीं। इतनी विशुद्ध गूढ़ ज्ञान वाली पुस्तकको

इतनी सरल, रोचक भाषामें पाठकोंको देनेके उपलक्षमें श्री ब्रह्मचारीजी सबकी ओरसे धन्यवादार्ह हैं । धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद !

प्रयाग तथा काशी विश्वविद्यालयोंके भूतपूर्व कुलपति तथा जन-सेवा संघ (पबलिक सर्विस कमीशन) के भूतपूर्व अध्यक्ष माननीय स्वर्गीय पं० अमरनाथजी झा —

श्रीभागवत दर्शन (भागवती कथा) के कुछ खण्ड पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। भारतीय संस्कृति के आदर्शोंका ज्ञान इन कथाओंसे अच्छा मिलता है। ये पुस्तकें सरल और हृदयङ्गम भाषामें लिखी गयीं हैं। ब्रह्मचारीजीने इन्हें लिखकर शिक्षार्थियों का बड़ा उपकार किया है।

प्रयाग विश्व-विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति स्वर्गीय श्री आर० डी० रानाडे,एम० ए०—

(अनूदित)

मैंने श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी की 'भागवती कथा' का ध्यान पूर्वक अवलोकन किया । लेखकके भक्तिमें दृढ़विश्वास की शक्ति एवं प्रभाव डालने वाली धारा प्रवाह लेखनीसे उनका लेख जीता जागता है । लेखकका श्रीमद्भागवतके आख्यानों का चित्रण करने का प्रयत्न प्रशंसनीय है। लेखक के कथनानुसार यह एक ऐसी ग्रन्थ माला होगी जिसमें लगभग १०८ मणि रहेंगे । इस ग्रन्थ-माला द्वारा साधारण कोटि के पाठक एवं जिज्ञासुओंके लिए सन्त महापुरुषों की कथाएँ सुलभ हो जायँगी । वे इस ग्रन्थके द्वारा अपने जीवन को

धार्मिक महापुरुषों के जीवन के साँचे में ढालने का मार्ग प्राप्त करने के योग्य बन सकेंगे और मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे ऐसी कथाओं के पाठ एवं मनन से ईश्वर के सच्चे प्रेम का रसास्वादन कर सकेंगे।

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी का परिश्रम अत्यन्त सराहनीय तथा समर्थनीय है।

हिन्दीके सुप्रसिद्ध लेखक और कवि, रूस में हिन्दीके उच्चाधिकारी डाक्टर रामकुमारजी वर्मा एम० ए०, पी० एच० डी०--

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी की प्रभावशालिनी लेखनी से मैं परिचित हूँ। जिस सरलता और दृढ़ विश्वास से वे धार्मिक इतिवृत्त लिखते हैं, वह हिन्दी के आधुनिक धार्मिक साहित्य में अद्वितीय हैं। आधुनिक शिक्षा ने जनता को हमारे सांस्कृतिक ज्ञान से बहुत दूर हटा दिया है। आज धर्म परिहास और विनोद का विषय बन रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे दर्शन और धर्म की अमर कथाएँ पूर्ण विश्वास और शक्ति के साथ लिखी जावें। श्री ब्रह्मचारीजी ने इसी क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का उपयोग किया है और वे अपनी कुशल लेखनी की सम्पन्नता में पूर्ण सफल हुए हैं। श्रीब्रह्मचारीजी की नवीन कृति 'भागवती कथा' साहित्य और धर्म दोनों ही की श्री है। मैं श्री ब्रह्मचारी जी से प्रार्थना करूँगा कि वे इस अमर साहित्य से देश का कल्याण करें।

पता—संकीर्तन भवन, झूसी (प्रयाग)

बिहार प्रान्त के भूतपूर्व राज्यपाल शुभमूर्ति श्रीयुत् एम० एस० अणे महोदय—

जयपुर से लौटने के पश्चात् मुझे आपका पत्र तथा आपकी पुस्तक "भागवती कथा" के कुछ अंक प्राप्त हुए । मुझे विश्वास है कि आपने जिस ग्रन्थ को पूरा करने का कार्य लिया है वह अत्यन्त महत्वपूर्ण साहित्यिक पुस्तक है और इसके द्वारा लोगों को श्री द्वैपायन व्यास के महान् संस्कृत के अन्तर्गत वर्णित कथाओं तथा ज्ञानवार्ता का परिचय प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। महाभागवत भक्ति मार्ग का प्रमुख धर्म ग्रन्थ है और आपके द्वारा किया हुआ उसका मनोहर हिन्दी अनुवाद हिन्दी भाषा भाषी जनता में इस मार्ग का प्रोत्साहन देगा । मैं आपके प्रयास की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ ।

पश्चिमी बङ्गाल के भूतपूर्व राज्यपाल मध्यप्रदेश के वर्तमान मुख्य मन्त्री माननीय पं० कैलाशनाथ जी काटजू—

आपकी लिखी हुई पुस्तक भागवती कथा प्राप्त हुई। इधर मैं अधिकतर बाहर रहा जिसके कारण इससे पहले आपको नहीं लिख सका ।

आपने यह पुस्तक श्रीभागवता कथा के प्रचार हेतु प्रकाशन करके बड़ा पुण्य का काम किया है। पुस्तक बड़ी ही रोचक है और साथ ही शिक्षाप्रद है। आपका उद्योग बहुत ही सराहनीय है आशा है कि घर-घर यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी ।

पता—संकीर्तन भवन, भूसी (प्रयाग)

युक्तप्रान्तीय लेजिस्लेटिव कौंसिल राज्यविधान परिषद के भू० पू० सभापति माननीय सर सीताराम जी एम० ए०

श्रीभागवती कथाके दो खंड प्राप्त हुए । कृपया आदरणीय श्रीप्रभुदत्त जी ब्रह्मचारीको प्रणाम कहियेगा । भक्तिरससे उत्तेजित होकर दूसरोंको भक्त बनानेके प्रयत्नमें जब कि हमारे युवक और युवती प्रायः श्रद्धाहीन होते जा रहे हैं यह प्रयत्न सर्वथा सराहनीय है।

यों तो भागवतका हिन्दी अनुवाद सचित्र दो जिल्दोंमें छपा है परन्तु ब्रह्मचारी जी जैसे भक्तराजकी लेखनीसे जो सरल शुद्ध भाषा भागवती कथा का वर्णन किया गया है वह रोचक तथा लाभदायक होना ही चाहिये । मुझे आशा है कि ब्रह्मचारी जी अपने उद्देश्यमें सफल होंगे। इस भागवती कथा की उपयोगिताको कौन हिन्दू न मानेगा और विशेषतः जब ब्रह्मचारी जी जैसे लेखककी स्फूर्त्ति उसमें भरी हो।

मध्यप्रान्त तथा विदर्भदेश की धारा सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष (स्पीकर) माननीय श्रीघनश्यामदासजी गुप्त

माननीय-ब्रह्मचारीजी, सादर नमस्ते,

भागवतीकथा के ३०।३१ खण्डके लिये धन्यवाद । ग्रन्थ बहुत सुन्दर लिखा गया है। भारतीय आदर्शकी ओर ले जाता है ।

मध्यप्रान्त तथा वरार सरकार के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय माननीय पण्डित रविशंकरजी शुक्ल—

मैंने "भागवती कथा" के दोनों भाग ध्यान-पूर्वक देखे। श्रीयुत् प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीने धर्मके मूल सिद्धान्तोंको प्रसंगों

एवं कथाओंके रूपमें स्पष्टकर हिन्दी साहित्यमें एक नवीन शैली को प्रश्रय दिया है। वर्तमान युगमें धर्म और संस्कृतिके प्रति जो उपेक्षा होती जा रही है, उसे दूर करने में "भागवती कथा" विशेष रूपसे सहायक होगी। ग्रन्थकी शैली सरल और मनोरंजक है। मुझे आशा है, कि श्रीब्रह्मचारीजी इस प्रकार के साहित्य से हिन्दीको समृद्धिशाली बनायेंगे।

उत्तर प्रदेश के प्रधानमंत्री श्रीबाबू सम्पूर्णानंदजी।

श्रीब्रह्मचारी प्रभुदत्तजी गत २५ वर्षों से मेरे ऊपर कृपा रखते हैं। 'भागवती कथा' का कुछ अंश पढ़ा। श्रीब्रह्मचारीजी जो लिखेंगे, वह लोकोपकारी ही होगा यह तो निर्विवाद बात है। भागवती कथा सुंदर पुस्तक है। आशा है मालाके अन्य सुमन भी ऐसे ही होंगे।

बिहारसरकारके भूतपूर्व अर्थमन्त्री माननीय स्वर्गीय श्रीबाबू अनुग्रह-नारायण सिंहजी

श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी की 'भागवती कथा' के द्वितीय खण्ड को मैंने देखा। वस्तुतः अपनी लेखनी से भक्तिभागीरथी की अविरल धारा इसमें बहाई है, जिसमें गोता लगानेसे चित्तको विशेष शान्ति मिलती है। लेखक का विचित्र औपन्यासिक शैली एवं लेखनकला का यह ग्रन्थ पाठकोंके लिए हृदयग्राही बन गया है।

पता——संकीर्तन भवन, झूसी [प्रयाग]

विहारप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षामंत्री माननीय आचार्य श्रीबद्रीनाथजी वर्मा।

परम भगवतभक्त श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने श्रीभागवत की कथाओं को हिन्दी में 'भागवती कथा' के नाम से प्रकाशित करने का बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रयास आरम्भ किया है। जिन्हें मुझे देखने और पढ़ने का सुयोग मिला है। कथायें अत्यन्त रोचक ढङ्ग से लिखी गई हैं और भाषा भी यथासम्भव सरल रखी गई है। इससे जनता को श्रीभागवत के रसास्वादन का अच्छा मौका मिलेगा। इस ग्रन्थ को पढ़ करके अपने प्रेम को भी पुष्ट कर सकेंगे और अपनी पुरानी संस्कृति का भी ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह पुस्तक बड़ी ही उपादेय और संग्रह करने योग्य है। मुझे आशा है कि पढ़े लिखे लोग इससे पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे और लाभार्थ विद्यालयों के पुस्तकालयों में रखने की चेष्टा करेंगे। श्रीब्रह्मचारीजी का प्रयत्न पूर्ण रूप से सफल हो यह मेरी आंतरिक कामना और ईश्वर से प्रार्थना है।

मध्यप्रान्त तथा बरार के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री माननीय श्रीसम्भाजी विनायक गोखले।

सम्माननीय तथा श्रद्धेय श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारी महोदय के लिखे हुए श्रीभागवती कथा माला के पहले दो पुष्प प्राप्त हुए। इन दोनों सुमनों में शुचिता और प्रसन्नता का आमोद, शुद्ध भक्तिरस का मकरन्द और सरल सुबोध ओघवती भाषा शैली का स्वाभाविक सौन्दर्य इतना मनोहारी है, कि भगवद्भक्त तथा अन्य पाठक, इस माला के अगले सुमनों की प्रतीक्षा में अवश्य रहेंगे। यह 'भागवती कथा" प्रसादपूर्ण राष्ट्रभाषा में (अर्थात् संस्कृतनिष्ठ सुबोध हिन्दी में) लिखकर राष्ट्रभाषा की सेवा का पुण्य भी श्रीप्रभुदत्तजी ने उठाया है।

भागवत धर्म तथा भारतीय संस्कृति का यथार्थ परिचय देने वाली इस ग्रन्थमाला का जनता हार्दिक स्वागत करेगी। ऐसी आशा मैं रखता।हूँ

कीर्तनीयः सदा हरिः

पुनः छप गया है

सचित्र

"भागवत चरित"

[सप्ताह]

सात हजार के दो संस्करण निकल चुके हैं तीसरे संस्करण की तैयारी है।

जिन लोगोंने श्रीब्रह्मचारीजी द्वारा लिखित "भागवती कथा" पढ़ी होगी, उन्हें विदित होगा कि इसमें प्रत्येक अध्याय के आदि-में और अन्तमें एकएक छप्पय होती हैं। ये छप्पय परस्पर में सम्बन्धित होती हैं। केवल छप्पयों को ही पढ़ते जाओ तो पूरी कथाएँ क्रमबद्ध आ जायेगी। कहना चाहिये "भागवती कथा" इन छप्पयों का भाष्यमात्र ही है। इन सब छप्पयों को सात भागों में बाँटकर उनके भी अध्याय बना दिये गये हैं। बीच में कथा प्रसंग जोड़ने को दोहा, सोरठा, छन्द तथा पद भी सम्मिलित कर दिये गये हैं। इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र और उनके भक्तों के चरित्र से युक्त यह पद्य काव्य साहित्य की एक अपूर्व वस्तु हो गयी है। भगवद्भक्तों के लिये तो रामायणकी भाँति नित्यपाठ करने के लिये यह अलौकिक वस्तु है। सात दिनों में पारायण करने से भागवत सप्ताह का पूर्ण फल इससे प्राप्त हो जायगा। मोटे सुन्दर चिकने कागज पर इसे छपाया है। ६०० से अधिक पृष्ठ इसमें हैं। सैकड़ों सादे और रङ्गीन चित्र भी हैं। न्योछावर सजिल्द ५।) आज ही पत्र लिखकर अपनी प्रति मँगालें।

॥ श्रीहरिः ॥

श्री बदरीनाथ-दर्शन

(श्रीब्रह्मचारीजीका एक अपूर्व महत्वपूर्ण ग्रन्थ)

श्रीब्रह्मचारीजी ने अनेकों बार श्रीबदरीनाथजीकी यात्रा की है। यात्रा ही नहीं की है, वे वहाँ महीनों रहे हैं। उत्तराखण्ड के छोटे बड़े सभी स्थानोंमें वे गये हैं। उत्तराखण्ड में कैलाश, मानसरोवर, शतोपन्थ, लोकपाल और गोमुख ये पाँच स्थान इतने कठिन हैं कि जहाँ पहाड़ी भी जाने से भयभीत होते हैं। उन स्थानों में ब्रह्मचारीजी गये हैं। वहाँ का ऐसा सुन्दर सजीव वर्णन किया है कि पढ़ते पढ़ते वह दृश्य आँखोंके सम्मुख नृत्य करने लगता है। उत्तराखण्डके सभी तीर्थोंका इसमें सरस वर्णन है, सबकी पौराणिक कथाएँ हैं, किंवदन्तियाँ हैं, इतिहास है यात्रावृत्त है। यात्रा सम्बन्धी जितनी उपयोगी बातें हैं, सभी का इस ग्रन्थमें समावेश है। बदरीनाथजीकी यात्रा पर इतना विशाल महत्वपूर्ण ग्रन्थ अभी तक किसी भाषामें प्रकाशित नहीं हुआ। आप इस एक ग्रन्थसे घर बैठे उत्तराखण्ड के समस्त पुण्यस्थलोंके रोमाञ्चकारी वर्णन पढ़ सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं। यात्रामें आपके साथ यह पुस्तक रहे तो फिर आपको किसीसे कुछ पूछना शेष नहीं रह जाता। लगभग सवा चार सौ पृष्ठकी सचित्र सजिल्द पुस्तकका मूल्य ४) मात्र है। शीघ्र मँगावें दूसरा सुंदर संशोधित संस्करण छप गया है।

महाभारतके प्राण महात्मा कर्ण

(पंचम संस्करण)

अबतक आप दानवीर कर्णको कौरवोंके पक्षका एक साधारण सेनापति ही समझते होंगे। इस पुस्तकको पढ़कर आप समझ सकेंगे, वे महाभारतके प्राण थे, भारतके सर्वश्रेष्ठ शूरवीर थे, उनकी महत्ता, शूरवीरता, ओजस्विता, निर्भीकता, निष्कपटता और श्रीकृष्णके प्रति महती श्रद्धाका वर्णन इसमें बड़ी ही ओजस्वी भाषामें किया है। ३५६ पृष्ठ की सचित्र पुस्तकका मूल्य केवल २॥) दो रुपये बारह आने मात्र है, शीघ्र मँगाइये, नूतन संस्करण छप गया है।

मतवाली मीरा

चतुर्थ संस्करण

भक्तिमती मीराबाईका नाम किसने न सुना होगा। उनके पद-पदमें हृदयकी वेदना है अन्तःकरणकी कसक है। ब्रह्मचारीजीने मीराके भावोंको बड़ी ही रोचक भाषामें स्पष्ट किया है। मीराके पदोंकी उसके दिव्य भावोंकी नवीन ढँग से आलोचना की है, भक्ति शास्त्रकी विशद व्याख्या है, प्रेमके निगूढ़ तत्वको मानवी भाषामें वर्णन किया है। मीराबाईके इस हृदय दर्पणको आप देखें और बहिन, बेटियों माता तथा पत्नी सभीको दिखावें। आप मतवाली मीराको पढ़ते पढ़ते प्रेममें गद्‌गद हो उठेंगे। मीराके ऊपर इतनी गंभीर आलोचनात्मक शास्त्रीय ढँगकी पुस्तक अभीतक नहीं देखी गयी। २२४ पृष्टकी सचित्र पुस्तकका मूल्य २) दो रुपये मात्र है। मीराबाई का जहरका प्याला लिये चित्र बड़ा कला पूर्ण है।

नाम संकीर्तन महिमा

लगभग १६–१७ वर्षके पहिले जब गोरखपुरमें अखंड कीर्तन हुआ था, तब ब्रह्मचारीजीने एक सज्जनके कहनेपर नाम संकीर्तन-के ऊपर जितनी भी शङ्काएँ उठ सकती हैं, उनका शास्त्रीय ढंगसे युक्तियुक्त समाधान किया था। यह पुस्तक प्रथम देहलीसे प्रकाशित हुई थी और थोड़े ही दिनोंमें अप्राप्य भी हो गयी। अब इसे हमने फिरसे छापा है। अन्तमें संकीर्तन की सुमधुररसों से युक्त अधिक ध्वनियाँ, स्तुति, प्रार्थना, और गाने योग्य सुन्दर-सुन्दर पद भी दे दिये हैं। पृष्ठ संख्या सौ है। मूल्य ॥)

"श्रीशुक"

ले०:—श्रीब्रह्मचारीजी"

यह रंगमंचपर खेलने योग्य धार्मिक नाटक जन हितार्थ बहुत ही उपादेय है। अश्लीलांश तथा स्त्री पात्रोंका अभाव होते हुए भी यह नाटक अत्यंत रोचक लिखा गया है। सभी कोटिके पुरुषोंने इसकी भूरि भूरि प्रशंसाकी है। पृष्ठ संख्या १२५, मू० ॥)

॥ श्रीराम ॥

सचित्र

"राघवेन्दु—चरित'

लेखकः—श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

श्रीब्रह्मचारीजीने "भागवती कथा" के (२७से ३१ तक) ५ खण्डोंमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजीके परम पावन चरित्र का वर्णन किया है। इन खण्डोंके प्रत्येक अध्यायके आदिमें और अन्तमें एक एक छप्पय है जो परस्परमें सम्बन्धित हैं, बीच बीचमें

कथा प्रसंग जोड़नेको दोहा, सोरठा, छन्द तथा पद आदि भी सम्मिलितकर दिये गये हैं, इस प्रकार यह श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र "तुलसीकृत रामायण" के तुल्य पाठ करनेके लिये अलौकिक वस्तु हो गया है ! २ घंटेमें इसका पाठ करनेसे सम्पूर्ण रामायणका पूर्ण फल प्राप्त होगा। पृष्ठ लगभग १६०, मू० ।=)

शोक-शान्ति

(श्रीब्रह्मचारीजीका एक मनोरञ्जक और तत्वज्ञान-पूर्ण पत्र)

(पंचम संस्करण छपकर तैयार है)

इस पुस्तकके पीछे एक करुण इतिहास है। आन्ध्र के गुन्टूर प्रान्त का एक परम भावुक युवक श्रीब्रह्मचारीजीका परम भक्त था, अपने पिताका इकलौता अत्यन्त ही प्यारा दुलारा पुत्र था। वह त्रिवेणी सङ्गमपर अकस्मात् स्नान करते समय डूबकर मर गया। उसके संस्मरणोंको श्रीब्रह्मचारीजीने बड़ी ही करुण भाषामें लिखा है पढ़ते पढ़ते आँखें स्वतः बहने लगती हैं। फिर एक सालके पश्चात् उसके पिताको बड़ा ही तत्वज्ञान पूर्ण ५०। ६० पृष्ठोंका पत्र लिखा था। उस लिखे पत्रकी हिन्दी, तैलगू और अँगरेजीमें बहुत-सी प्रतिलिपियाँ हुई, उसे पढ़कर बहुतसे संतप्त प्राणियोंने शान्ति लाभकी। इसमें मृत्यु क्या है, इसको बड़े ही सुन्दर ढँगसे मनोरञ्जक कथाएँ कहकर वर्णन किया गया है, लेखकने अपने निजी जीवनके दृष्टान्त देकर पुस्तकको अत्यन्त उपादेय बना दिया है। अक्षर अक्षरमें विचारक लेखककी अनुभूति भरी हुई है। उसने हृदय खोलकर रख दिया है। प्रत्येक घरमें इस पुस्तक का रहना आवश्यक है। ६४ पृष्ठ का सुन्दर पुस्तक का मूल्य ।=)।

भारतीय संस्कृति और शुद्धि

क्या अहिन्दु हिन्दु बन सकते हैं ?

आज सर्वत्र बलात् धर्म परिवर्तन हो रहे हैं। हिन्दु समाज-से लाखों स्त्री, पुरुष सदा के लिये निकलकर विधर्मी बन रहे हैं, कुछ लोगोंका हठ है कि जो अहिन्दु बन गये, वे सदाके लिये हिन्दु समाजसे गये, फिर वे हिन्दु हो ही नहीं सकते। श्रीब्रह्मचा-रीजीने पुराण, स्मृति इतिहास और प्राचीन ग्रन्थोंके प्रमाणोंसे यह सिद्ध किया है, कि हिन्दु समाज सदासे अहिन्दुओंको अपने में मिलता रहा है। जबसे हिन्दु समाजने अन्य सम्प्रदायवालोंके लिये अपना द्वार बंद किया है तभीसे उसका ह्रास होने लगा है। बड़ी ही सरल सुन्दर भाषामें शास्त्रीय विवेचन पढ़कर अहिन्दुओं को हिन्दु बनायिए। अपने समाजकी उन्नति कीजिये। सुन्दर छपाई सफाईयुक्त ७५ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य केवल ।=) ।

"श्री श्री चैतन्य चरितावली"

(ले०:—श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारी)

श्री ब्रह्मचारीजी ने श्री महाप्रभु के पावन चरित को बड़ी ही हृदयग्राही एवं रोचक भाषा में ५ खण्डों में वर्णन किया हैं। जिसे आज से २४, २५ वर्ष पहिले गीताप्रेस गोरखपुरने प्रकाशित किया था। सभी कोटि के पुरुषोंने इसे हृदयसे अपनाया और इनके दो संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गये। इसका तीसरा संस्करण सं-कीर्तन-भवन, झूसीसे निकला है। प्रथम खण्ड छपकर तैयार है, शेष खण्ड शीघ्र ही छप रहे हैं। मू० १) प्रथम खण्ड।

मेरे महामना मालवीयजी

और

उनका अन्तिम संदेश

अधिकारियोंने श्रीब्रह्मचारीजीको विजयादशमीके अवसर पर रामलीलाके जुलूसके सम्बन्ध में कारावास भेज दिया था। देश के कोने कोने से युक्तप्रान्त के मुख्य मंत्री के पास सैकड़ों तार पत्र गये। रोग शय्यापर पड़े पड़े महामना मालवीयजीने प्रधान मंत्री और गृह मंत्रीको तार दिये। वे ही उनके जीवन के अंतिम तार थे। ब्रह्मचारीजी को छुड़ानेको उन्होंने तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीपन्तजी और तत्कालीन पुलिस मन्त्री स्वर्गीय मिस्टर किदवई को जो पत्र लिखे वे ही उनके अन्तिम पत्र थे। इन पत्रोंको लिखकर और ब्रह्मचारीजीको छुड़ाकर उसके आठवें दिन वे इस असार संसारसे चल बसे। इस पुस्तक में उन पत्रों के लिखने का बड़ा ही सरस, रोचक और हृदयग्राही इतिहास है। महामना मालवीयजीके सम्बन्धके श्रीब्रह्मचारी महाराजके अनेकों सुखद संस्मरण हैं। अन्तमें उनका पूरा ऐतहासिक सन्देश भी है। पुस्तक बड़ी रोचक और ओजस्वी भाषामें लिखी गयी है गुटकाके आकार के लगभग १३० पृष्ठ हैं मूल्य ।)। १) से कमकी वी० पी० न भेजी जायगी। स्वयं पढ़िये और मँगाकर वितरण कीजिये द्वितीय संस्करण छपकर विक्री हो रहा है।

भागवती कथाकी बानगी

जो सज्जन 'भागवती कथा'के पूरे खण्डोंका अध्ययन नहीं कर सकते या उसका कुछ आस्वादन शीघ्र ही करना चाहते हैं वे इस चासनी रूप बानगीको आज ही ।) भेजकर मँगालें। पृष्ठ सं० १००

भागवत चरित की बानगी

भागवत चरित में से ही कुछ पद्यों के अध्याय बानगी के रूप में छापे गये हैं। इसे पढ़ने से आप भागवत चरित के सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। १०० पृष्ठों की सचित्र पुस्तक का मूल्य चार आना मात्र।

प्रभुपूजापद्धति

(भगवान् की पूजा करने की सरल सुगम शास्त्रीय विधि)

बहुत से नर-नारी भगवान् की पूजा करना तो चाहते हैं, किन्तु वे पूजा की विधि नहीं जानते। इस पुस्तक में कैसे पूजा करनी चाहिये कौन कौन सी वस्तु पूजा में चाहिये षोडशोपचार पूजा में कौन-कौन विधि है उनके कौन मंत्र है। ये सभी बातें सरलता के साथ समझाई गयी है सबके श्लोक दिये गये हैं जो श्लोक भी नहीं बोल सकते उनके लिये उसी भावके दोहा लिख दिये हैं। बहुत ही उपादेय ग्रन्थ है। दो चित्र भी दिये ४० पृष्ठ की सुंदर स्वच्छ सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल दो आने १२नये पैसे

प्रयाग माहात्म्य

इसमें ब्रह्मचारीजीने प्रयाग के सभी प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तीर्थों का उल्लेख किया है। जानने योग्य सभी बातें इसमें बतायी गयीं हैं। अन्तमें आठ सुंदर छप्पयोंमें प्रयागराजकी स्तुति भी की है। यह पुस्तिका सबके लिये उपादेय है। इसके कवर पृष्ठपर सुंदर रङ्गीन श्रीवैणीमाधवजी का चित्र है। ४० पृष्ठकी सुन्दर कागदपर छपी पुस्तकका मूल्य केवल एक आना है।

श्रीवृन्दावन माहात्म्य

वृन्दावनका महत्व, वहाँके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध मन्दिरोंका परिचय तथा अन्य आवश्यक स्थानोंका इसमें उल्लेख है। वृन्दावनके यात्रियोंके लिये यह परम उपादेय ग्रन्थ है। छपाई सफाई सुन्दर है, २४ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य केवल एक आना हैं कई संस्करण छप चुके हैं। वृन्दावन प्रेमियोंको इसे अवश्य मँगाना चाहिये। जो हजार दो हजार इकट्ठा मँगाकर बाँटेगे उन्हें विशेष सुविधा दी जायगी।

निम्नलिखित शाखाओं में हमारी पुस्तकें मिल सकती हैं

१—कलकत्ता-सेठ तनसुखराय केड़िया। पी० ३ कलाकार स्ट्रीट
२—देहली-शंङ्करलाल ऋषिकुमार दुशालावाले मोती बाजार।
३—पटना—पं० परमानन्द पांडेय मीठापुर।
४—झाँसी-वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन गुसाई पुरा।
५—बलिया-पं० श्यामसुन्दर उपाध्याय सेक्रेटरी जिलाबोर्ड।
६—नागौर-महावीर प्रसादजी गौड़ बाजार बड़ा नागौर। (मारवाड़)
७—कानपुर पं० ओंकारनाथ जी दुबे वकील सारदा सदन सिविल लाइन्स।
८—लखनऊ—तेजनारायणजी टंडन, विद्या मंदिर चौक।
९—मैनेजर—मालवीय पुस्तकालय अमीनाबाद पार्क।
१०—चँदौसी-भोलानाथ जी गुप्ता न्यू एजेंट चँदौसी (मुरादाबाद।
११—प्रयाग गोपालदास अग्रवाल, २५५ रानी मंडी।
१२—" साँवलदासजी खन्ना, चौक।
१६—पं० हनुमत दयालजी जार्ज टाउन।
१४—मैनेजर भक्तभारत कार्यालय चार संप्रदाय आश्रम वृन्दावन।

|| श्रीहरिः ||

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें

जो हमारे यहाँ मिलती हैं।

१—भागवती कथा—(१०८) खण्डों में, ६६ खण्ड छपचुके हैं)
प्रति खण्ड का मूल्य १।), बारह आना डाकव्यय पृथक्।

२—श्री भागवत चरित—लगभग ९०० पृष्ठकी, सजिल्द मू० ५।)

३—बदरीनाथ दर्शन—बदरी यात्रा पर खोजपूर्ण महाग्रन्थ मू० ४)

४—महात्मा कर्ण—शिक्षाप्रद रोचक जीवन, पृ० ३५०, मू० २॥।)

५—मतवाली मीरा—भक्ति का सजीव साकार स्वरूप, मू० २)

६—नाम संकीर्तन महिमा—भगवन्नाम संकीर्तन के सम्बन्ध में उठने वाली तर्कों का युक्तियुक्तपूर्ण विवेचन। मू० ॥)

७—श्रीशुक—श्रीशुकदेवजी के जीवन की झाँकी (नाटक) मू० ॥)

८—भागवती कथा की बानगी—(आरंभ के तथा अन्य खंडों के कुछ पृष्ठों की बानगी) पृष्ठ संख्या १००, मू० ।)

९—शोक शान्ति—शोक की शान्ति करने वाला रोचक पत्र मू० ।—)

१०—मेरे महामना मालवीयजी और उनका अन्तिम संदेश—
मालवीयजी के जीवन के सुखद संस्मरण पृष्ठ सं० १३० मू० ।)।

११—भारतीय संस्कृति और शुद्धि—क्या अहिन्दु हिन्दु बन सकते हैं ?
इसका शास्त्रीय विवेचन पृष्ठ सं० ७६ मू० ।—)

१२—प्रयाग माहात्म्य—मू० —) एक आना।

१३—वृन्दावन माहात्म्य—मू० —)

१४—राघवेन्दु चरित—भागवतचरित से ही पृथक् छापागया है मू०।—)

१५—प्रभुपूजा पद्धति—भगवान् की पूजा करने की सरल सुगम शास्त्रीय बिधि मू० =)।

१६—श्री चैतन्य चरितावली—पाँच खंडों में प्रथम खंड का मू० १)।

१७—भागवत चरित की बानगी—भागवत चरित के कुछ अध्यायों की बानगी—मू० ।)